# राजनीति में पत्रकारों के घालमेल का दिखने लगा अंजाम, कलम बिकने लगी तो पत्रकारिता का काम तमाम

**रवीश कुमार**

**आ**ज कहानी घूम रही है ज़ी न्यूज़ के ऐंकर रोहित रंजन के गिरफ्तारी के प्रयास की। कमाल यह है कि ज़ी न्यूज़ ने राहुल गांधी के मामले में फेक वीडियो चलाने की सारी ज़िम्मेदारी अपने ही दो कर्मचारियों पर डाल दी है और उनके खिलाफ थाने में शिकायत कर दी है। अब तय करना मुश्किल हो रहा है कि प्रेस की आज़ादी पर हमला छत्तीसगढ़ की पुलिस कर रही है या ज़ी न्यूज़ कर रहा है या ज़ी न्यूज़ के वे दो कर्मचारी कर रहे हैं जिन पर ज़ी न्यूज़ ने मिलीभगत कर वीडियो में छेड़छाड़ के आरोप लगाए है। सीधे गिरफ्तारी पर आने से पहले देखते चलते हैं कि यह कहानी कहां से शुरू होती है और कहां कहां घूमती जाती है।

**मोहम्मद ज़ुबैर गिरफ्तार, रोहित रंजन फरार**

राहुल गांधी के बयान से छेड़छाड़ का मामला : एंकर ने न्यायालय से तत्काल सुनवाई का आग्रह कियाराहुल गांधी के बयान से छेड़छाड़ का मामला: एंकर ने न्यायालय से तत्काल सुनवाई का आग्रह किया

एंकर रोहित रंजन याचिका पर जल्द सुनवाई के लिए फिर पहुंचे एससी, कोर्ट ने कहा-सीजेआई तय करेंगे एंकर रोहित रंजन याचिका पर जल्द सुनवाई के लिए फिर पहुंचे एससी, कोर्ट ने कहा-सीजेआई तय करेंगे

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी अपने संसदीय क्षेत्र वायनाड जाते हैं. उनके दफ्तर में तोड़फोड़ होती है जिसका आरोप एसएफआई पर लगता है, हालांकि एसएफ़आई ने इसका खंडन किया है कि उसके कार्यकर्ताओं ने हमला नहीं किया। हिन्दू की खबर में लिखा है कि इस हमले के आरोप में स्न्नद्ब के 24 कार्यकर्ता जेल में हैं। 25 जून को हुई इस घटना पर वायनाड में पत्रकार राहुल गांधी से सवाल करते हैं तो जवाब में राहुल गांधी कहते हैं कि जिन बच्चों ने ऐसा किया, उन्हें समझ नहीं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं. उन्हें माफ कर देना चाहिए.

ख़ुद ज़ी न्यूज़ ने माना है कि यह लापरवाही जानबूझ कर की गई है, उसे भूलवश या मानवीय चूक की आशंका नहीं है बल्कि गंभीर अपराध की आशंका है। ज़ी मीडिया कोरपोरेशन ने नोएडा पुलिस को अर्जी दी है कि उसके दो पत्रकार नरिंद्र सिंह और बिकास कुमार झा के खिलाफ मामला दर्ज हो और जांच हो। द प्रिंट ने लिखा है कि

वरिष्ठ अधिकारी ने बताया है कि ज़ी न्यूज़ ने शो के प्रोड्यूसर के खिलाफ जो शिकायत दर्ज कराई है, उसके आधार पर मामला दर्ज हुआ है। नोएडा पुलिस ज़ी न्यूज़ के पत्रकार रोहित रंजन के घर गई क्योंकि न्यूज़ चैनल ने ही मांग की है कि उसके कर्मचारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करे। उसी समय छत्तीसगढ़ की पुलिस भी गिरफ्तार करने पहुंची थी। ज़ी न्यूज़ की शिकायत की खबर की हमारे सहयोगी मुकेश सिंह सेंगर ने भी पुष्टि की है।

शिकायत पत्र में ज़ी न्यूज़ की तरफ से लिखा है कि हम कुछ तथ्य बताना चहते हैं, जिससे बहुत ही गंभीर अपराध करने का शक पैदा होता है। नरिंद्र सिंह और बिकास कुमार झा, सीनियर प्रोड्यूसर और प्रशिक्षु प्रोड्यूसर के तौर पर संपादकीय टीम से जुड़े थे। 1 जुलाई को दोनों ने न्यूज़ एजेंसी एएनआई से एक वीडियो प्राप्त किया जिसमें राहुल गांधी का बयान था। जिसमें मिस्टर गांधी ने वायनाड में उनके दफ्तर में हुए हमले की निंदा की थी लेकिन नज़र से चूक जाने के कारण यह बयान हमारे डीएनए शो में ग़लत संदर्भ में चल गया, जिसके कारण कांग्रेस पार्टी ने कंपनी के खिलाफ प्रदर्शन किया. कंपनी ने इस मामले की आंतरिक जांच कराई है और इस ग़लती के लिए जिम्मेदार नरिंद्र सिंह और बिकास कुमार झा को नौकरी से निकाल दिया है। मौजूदा हालात में कंपनी ठोस रुप से मानती है और शक करती है कि बिकास कुमार झा और नरिंद्र सिंह की तरफ जो लापरवाही हुई है, वह जानबूझ कर हुई है। इसमें दोनों की मिलीभगत है.इस आलोक में आपसे गुज़ारिश है कि आप बिकास कुमार झा और नरिंद्र सिंह के खिलाफ स्न्नद्बक्र....दर्ज करें और इस मामले की जांच करें।

**कांग्रेस ने इस वीडियो को लेकर आपत्ति जताई, ज़ी न्यूज़ के खिलाफ मुख्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और अलग-अलग जगहों पर.....दर्ज की है। यह भी सही है कि इस घटना को लेकर ज़ी न्यूज़ ने प्रमुखता से माफी मांगी है। डीएनए में भी माफी मांगी गई है और दूसरे कार्यक्रम में भी और ट्विटर पर भी। मेरे ख्याल से इतना काफी था.कांग्रेस को रोहित रंजन की गिरफ्तारी की ज़िद छोड़ देनी चाहिए, हां अब अगर ज़ी न्यूज़ को लगता है कि इस मामले में किसी की मिलीभगत थी, लापरवाही नहीं थी, गंभीर अपराध का शक है तब तो मामला कांग्रेस के बस के बाहर का हो जाता है। इसलिए अभी इस मामले को पत्रकारिता पर हमला की तरह देखने से बचना चाहिए। अगर हमला है तो ऐंकर रोहित रंजन सबसे पहले ज़ी न्यूज़ से ही पूछें कि क्या नरिंद्र सिंह और बिकास कुमार झा के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराकर सही किया है?**

क्या वाकई राहुल गांधी के वीडियो को इस तरह चलाने की जवाबदेही में ऐंकर या किसी और वरिष्ठ का कोई रोल नहीं था? रोहित रंजन ही बता सकते हैं कि विकास कुमार झा और नरिंद्र सिंह ने मिलिभगत कर क्या किया और उनका यह काम पत्रकारिता पर हमला था या नहीं? यह हमला किसके फायदे के लिए किया गया? राहुल गांधी के वीडियो को डाक्टर किया गया यानी इधर उधर का जोड़ जाड़ दिया गया, इसके लिए फेक वीडियो का भी इस्तेमाल हो रहा है।

लेकिन यह मामला राजनीतिक रुप से खत्म नहीं हो रहा है। ज़ी न्यूज़ के कार्यक्रम के क्लिप को लेकर बीजेपी के सांसद और पूर्व सूचना प्रसारण मंत्री राज्यवर्धन राठौड़ और कई अन्य लोगों ने ट्विट किया या वायरल किया।

**आज के हिन्दू अखबार के पहले पन्ने पर यह खबर है कि कांग्रेस ने बीजेपी सांसद ने इस ट्वीट को डिलिट करने के लिए कहा है, तब भी नहीं किया है। यही नहीं कांग्रेस के मीडिया प्रभारी जयराम रमेश ने बीजेपी अध्यक्ष को पत्र लिखा है कि उनके सांसद फेक वीडियो फैलाते हैं। कायदे से राज्यवर्धन राठौड़ को यह ट्विट ज़ी की माफी के बाद ही डिलिट कर देना चाहिए था क्योंकि राज्यवर्धन राठौड़ बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता भी हैं। पार्टी के जिम्मेदार पद पर हैं।**

हमने पूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री राज्यवर्धन राठौड़ का ट्विटर हैंडल चेक किया, आप भी देख सकते हैं, राज्यवर्धन राठौड़ के 17 लाख फोलोअर हैं। ज़ी न्यूज़ के माफी के बाद आज भी उनके हैंडल से यह झूठ प्रसारित हो रहा है कि राहुल गांधी ने उदयपुर के हत्यारों को बच्चा समझ कर माफ कर दिया है, जबकि राहुल ने घटना के तुरंत बाद निंदा की थी और कड़ी कार्रवाई की मांग की थी।

राज्यवर्धन राठौड़ ने 2 जुलाई को सुबह दस बजे यह ट्विट किया इसमें ज़ी न्यूज़ के कार्यक्रम के क्लिप का इस्तमाल किया गया है और क्लिप के ऊपर लिखा है "उदयपुर हो या वायनाड़, जेएनयू में "अफजल हम शर्मिंदा हैं" और "भारत तेरे टुकड़े होंगे" गैंग के साथ खड़ी रहने वाली कांग्रेस का चरित्र वही रहता है। जेहादी आतंक की विषबेल का बीज किसने बोया, किसने सींचा, खुद सोचिए।" इसी के साथ भाजपा सांसद ने ज़ी न्यूज़ का वीडियो क्लिप भी शेयर किया है जिसे लेकर ज़ी न्यूज़ माफी मांग चुका है। राज्यवर्धन राठौड़ ने ज़ी न्यूज़ के ऐंकर के बयान को अपने ट्विट में शामिल नहीं किया है। 3 जुलाई को राज्यवर्धन राठौड़ ट्विट करते हैं कि "माफी तो @RahulGandhi और कांग्रेस के नेताओं को माँगनी होगी, या फिर ये लोग कठोर कानूनी कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहें। जिस प्रकार ये लोग आरएसएस व भाजपा पर आधारहीन आरोप लगाकर जाँच की दिशा और जनता का ध्यान भटकाने का प्रयास कर रहे हैं, उसका परिणाम इन्हें भोगना पड़ेगा." राज्यवर्धन राठौड़ सूचना प्रसारण मंत्री रहे हैं। ज़ी न्यूज़ के क्लिप को शेयर करना उतनी बड़ी गलती नहीं है क्योंकि एक चैनल ने चलाया था लेकिन जब उस चैनल ने ही माफी मांग ली तब क्यों राठौड़ ने ज़ी न्यूज़ का क्लिप डिलिट नहीं किया? तब भी जब ट्विटर कंपनी ने इस ट्विटर के नीचे चेतावनी चिन्ह लगा दिया है।

यहां एक बात कहना ज़रूरी है कि पत्रकारिता के पेशे में हम सभी से मानवीय भूल होती है। मैं खुद कई बार नाम,नंबर को लेकर ग़लती कर जाता हूं। कई बार कानून फैसलों या आर्थिक घटनाओं को समझने में भी कमियां रह जाती हैं। कोई इशारा कर देता है तो अगले कार्यक्रम में सुधार भी कर लेता हूं और मामूली ग़लती होती है तो आगे भी बढ़ जाता हूं।

**( इमेज सहारनपुर की घटना इन ) जैसे 4 जुलाई के कार्यक्रम में हमने कहा कि सहारनपुर में कई लोगों के खिलाफ 307 की धारा लगाई गई है तो कोर्ट ने पूछा कि जिन्हें चोट लगी है, वो कौन हैं, तो एक वकील ने ध्यान दिलाया कि हत्या के इरादे का संबंध चोट लगी है या नहीं लगी से नहीं हो सकता। उनकी बात सही भी लगी और इससे सीखा भी। तो ऐसी चूक हो जाती है जिसे हम कई बार सुधार करते है.**

लेकिन राहुल गांधी बयान दे रहे हैं वायनाड को लेकर, उसे जोड़ा जा रहा है उदयपुर से। खुद ज़ी न्यूज़ ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में गंभीर अपराध की साज़िश का अंदेशा ज़ाहिर किया है। जब चैनल ही पुलिस से जांच की मांग कर रहा है तब ज़ाहिर है यह केवल मानवीय भूल नहीं ह। हम ज़ी न्यूज़ के पत्रकार रोहित रंजन की गिरफ्तारी के मसले पर आएंगे लेकिन जैसा की शुरू में कहा कि इस कहानी को सिलेसिलेवार ढंग से देखते हैं.।

दिवंगत पत्रकार पवन जयसवाल के खिलाफ केस हो गया, प्रशांत कनौजिया और सिद्दीक कप्पन, अतिक उर रहमान और अब पत्रकार मोहम्मद ज़ुबैर को गिरफ्तार किया गया.क्या रोहित रंजन को इनमें से किसी भी पत्रकार की गिरफ्तारी को पत्रकारिता पर हमला नहीं लगा?

आपातकाल नहीं लगा? क्या सभी की या इनमें से किसी एक के भी मामले में रोहित ने निंदा की?

# अध्ययन : विज्ञान में बराबरी से काम करती महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों से 59 प्रतिशत पीछे

**आ**जकल लगभग सभी मंचों से समाज में महिलाओं को बराबरी का स्थान देने की बात की जाती है। परंतु वैश्विक स्तर पर विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की बात करें तो कुछ दूसरा ही दृश्य उभरता है। प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका 'नेचर टुडे' में हाल में प्रकाशित एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार, विज्ञान में बराबरी से काम करती महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों से 59 प्रतिशत पीछे हैं। महिला शोधकर्ताओं द्वारा शीर्ष विज्ञान जर्नल्स में प्रकाशित किए गए काम को पुरुष शोधकर्ता द्वाटा प्रकाशित किए गए उसी गुणवत्ता के काम की तुलना में काफी कम उल्लेख मिलते हैं। यहां तक कि 59 प्रतिशत मामलों में पुरुष अपनी ही झोली में डाल लेते हैं।

न्यूयार्क यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए इस अध्ययन में 9,778 शोध दलों से वार्ता की गई, जिनमें लगभग डेढ़ लाख स्त्री-पुरुष सम्मिलित थे। निश्चित रूप से विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ विज्ञान में भी महिलाओं की संख्या बढ़ी है, किंतु अब भी लिंग-आधारित भेदभाव दिखने में आ ही जाता है। अन्य क्षेत्रों की भांति विज्ञान में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के योगदानकर्ताओं के रूप में महिलाओं का नाम बमुश्किल याद किया जाता है। भारत के सबसे बड़े वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास संगठन 'सीएसआइआर' द्वारा कराए गए एक सर्वे के अनुसार इच्छा और रुचि के बावजूद भारत के विज्ञान जगत में महिलाओं की स्थिति सुधरी नहीं है।

साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथेमेटिक्स(एसटीईएम-स्टेम) में करिअर बनाने में महिलाएं क्यों पीछे हैं? एक स्टडी कहती है स्टेम में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा आधे से भी कम रिसर्च पब्लिश करने का मौका मिलता है। यही नहीं उन्हें रिसर्च के लिए पुरुषों के मुकाबले कम पैसे भी दिए जाते हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियां और वर्कप्लेस पर कम अहमियत दिए जाने जैसी कुछ वजहें हैं जिनके चलते भारत में रिसर्च फील्ड में महिलाओं की संख्या बमुश्किल 15 प्रतिशत ही है।

इस सर्वे के अनुसार, देश के अनुसंधान और विकास क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी केवल 15 प्रतिशत है। वैसे यूनेस्को के ताजा सर्वे के अनुसार समूचे विश्व में 30 प्रतिशत महिलाएं ही शोध के क्षेत्र में हैं, वहीं 13.9 प्रतिशत के साथ दक्षिण एशिया की स्थिति तो और भी ज्यादा खराब है। आखिर इस लैंगिक असमानता के पीछे क्या कारण हैं? सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद आज भी पूरे विश्व में व्यावहारिक स्तर पर लैंगिक रूढ़िवादिता जटिल रूप में मौजूद है।

कई सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि इसके मुख्य कारण मर्दवादी सोच, सामाजिक मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव, विवाह और तरह-तरह के पारिवारिक दायित्व व अवरोध हैं. ज्यादातर माता-पिता अपनी बेटियों को कैरियर-मुखी विज्ञान विषयों में नामांकन कराने की अनुमति नहीं देते या उसके लिए प्रोत्साहित नहीं करते। यहाँ तक यह भी देखने में आया है कि कई बार शोध मार्गदर्शक, यह सोचते हुए कि अगर घर चलाने से संबंधित जिम्मेदारियों के चलते महिला शोधकर्ता पीएचडी छोड़ देंगी तो उनकी सारी मेहनत बेकार चली जाएगी, महिलाओं को पुरुषों

की तुलना में कम तवज्जो देते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की कम भागीदारी की वजहों में संगठनात्मक कारकों की भी अहम भूमिका है. महिला रोल मॉडलों की कमी ने भी? ्यादातर महिलाओं को इन क्षेत्रों में प्रवेश से रोकने का काम किया है। आखिर इस लैंगिक असमानता के पीछे के क्या कारण हैं? सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद आज भी दुनिया भर में व्यावहारिक स्तर पर लैंगिक रूढ़िवादिता (जेंडर स्टीरियोटाइप्स) जटिल रूप में मौजूद है। आम तौर पर यह रूढ़िगत मान्यता व्याप्त है कि कुछ खास कामों के लिए पुरुष ही योग्य होते हैं और महिलाओं की अपेक्षा पुरुष इन कामों में ज्यादा कुशल होते हैं और महिलाएं नाजुक और कोमल होती हैं इसलिए वे मुश्किल कामों के लिए अयोग्य हैं। यह पूर्वाग्रह अभी भी कायम है कि लड़कियां और महिलाएं विज्ञान और गणित पसंद नहीं करतीं हैं या उनकी इन विषयों में रुचि नहीं होती है। पुरुषों के अलावा बहुत सी महिलाएं भी यही सोच रखती हैं कि वे कुछ चुनिंदा 'नजाकत भरे' कामों या विषयों (जैसे सामाजिक विज्ञान और गृह विज्ञान) के ही काबिल हैं।

**-साइबर स्पेस**